ढके क्षेत्रफल की आवश्यकता होती है।

8. ब्यांत के बाद बकरी तथा उसके मेमनों को एक सप्ताह तक साथ रखें।

स्वास्थ्य प्रबन्ध:

1. वर्षा ऋतु से पहले एवं बाद में (साल में दो बार) कृमि नाशक दवा पिलायें।
2. रोग निरोधक टीके (मुख्यत: पी.पी.आर., ई.टी., पोक्स, एफ.एम.डी. इत्यादि) समय से अवश्य लगवायें।
3. बीमार पशुओं को छटनी कर स्वस्थ पशुओं से अलग रखें एवं तुरंत उपचार कराऐं।
4. आवश्कतानुसार बाह्य परजीवी के उपचार के लिए ब्यूटाक्स (0.1 प्रतिशत) के घोल से स्नान करायें।
5. नियमित मल परीक्षण (विशेषकर मेमनों) करायें।

सामान्य प्रबंध:

1. बच्चे के जन्म के तुरन्त बाद साफ कपड़े से उसके नथुनों की सफाई करें।
2. नवजात मेमनों की नाभिनाल को शरीर से 3 से.मी. नीचे बाँधकर उसके लगभग एक सेमी नीचे काटकर टिंचर आयोडीन 2-3 दिन तक लगायें।
3. प्रत्येक बकरी की पहचान के लिए टेंगिंग अवश्य करें जिससे उसकी वंशावली, खान-पान आदि की सटीक जानकारी मिल सके।
4. बकरियों को साफ पानी दिन में (2-3 बार) पिलायें।
5. जिन बकरियों के नीचे दूध कम हो उनके बच्चों को उस बकरी के आस-पास ब्यायी बकरियों का दूध पिलायें।
6. बकरियों के बढ़े खुर समय पर काट दें।
7. प्रतिमाह बच्चों के शरीर भार का मापन करें जिससे उनकी बढ़वार व स्वास्थ्य का पता चलता रहे।

बाजार प्रबन्ध:

1. जानवरों को मांस के लिए शरीर भार के अनुसार बेचें।
2. शुद्ध नस्ल एवं उच्च गुणवत्ता के बकरियों को बकरी प्रजनक क्षेत्रों को बेचने पर अधिक लाभ होता है।
3. मांस उत्पादन के लिए पाले गये नरों को लगभग 1 वर्ष की उम्र पर बेच दें। इसके उपरान्त शारीरिक भार वृद्धि बहुत कम (10-15 ग्राम प्रतिदिन) एवं पोषण खर्च अधिक रहता है।
4. बकरी पालक संगठित होकर उचित भाव पर बकरियों को बेचें।
5. बकरों को विशेष त्यौहार (ईद, दुर्गा पूजा) के समय पर बेचने पर अच्छा मुनाफा होता है।

तालिका: बकरियों के वार्षिक रोग-रोकथाम हेतु कलेन्डर/सूची

विवरण	अवधि	दवा/टीका व माध्यम	टीके का असर	आयु
डिवर्मिंग (अन्त: परजीवी नाशक)	वर्षा ऋतु से पहले तथा वर्षा ऋतु के बाद	एलबेन्डाजोल, फेनबेन्डाजोल, क्लोसेन्टल, मोरेन्टल टाइट्रेट (पिलायें)		3 माह से ऊपर
डिपिंग (बाह्य परजीवी नाशक)	मार्च व अक्टूबर	ब्यूटाक्स या इक्टोमिन के 0.1-0.4 प्रतिशत के घोल से नहलायें		एक माह के बाद
टीकाकरण				
पी.पी.आर.	वर्ष के किसी भी समय	त्वचा के नीचे	3 वर्ष तक	3 माह या ऊपर
खुरपका मुँहपका (एफ.एम.डी.)		शरीर के मांस वाले भाग में	छ: माह तक	
गलाघोटूं रोग (एच.एस.)		शरीर के मांस वाले भाग में	छ: माह तक	
इन्ट्रोटोक्सीमिया (ई.टी.)		त्वचा के नीचे	छ: माह तक	
पोक्स		त्वचा के नीचे	एक वर्ष	

- एफ.एम.डी. एवं ई.टी. के टीकाकरण को प्रभावी बनाने के लिये 3-4 सप्ताह बाद बूस्टर डोज अवश्य लगवायें ।
- पी.पी.आर. को तीन वर्ष के अन्तराल पर एवं एफ.एम.डी. और ई.टी. के टीकों को छ: माह के अन्तराल पर अवश्य लगवायें।
- दो टीकों के मध्य कम से कम 15 दिन का अंतराल रखें। पहले पी.पी.आर. का टीकाकरण करवायें।

लेखक :

मनोज कुमार सिंह, नीतिका शर्मा, दिनेश कुमार शर्मा, अरविन्द कुमार, महेश शिवानंद डिगे, अनुपम दीक्षित, सौविक पाल एवं आर. पुरूषोत्तम

प्रकाशक :

एम. एस. चौहान, निदेशक, भा.कृ.अ.प.-के.ब.अ.सं., मखदूम

अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें-

अखिल भारतीय समन्वित बकरी शोध परियोजना

भा.कृ.अ.प.-केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान, मखदूम,

फरह-281122, मथुरा (उ.प्र.)

ys9456684421@gmail.com

वैज्ञानिक विधि से व्यवसायिक बकरी पालन

भाकृअनुप ICAR

CIRG 1979 MATHURA

अखिल भारतीय समन्वित बकरी शोध परियोजना

भा.कृ.अ.प.-केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान, मखदूम,

फरह-281122, मथुरा (उ.प्र.)

2018-19

वैज्ञानिक विधि से व्यवसायिक बकरी पालन

एक समय था जब बकरी पालन गरीब ग्रामीणों, खेतिहर मजदूरों, लघु एवं सीमांत किसानों की आय का साधन माना जाता था । परंतु आज के परिदृश्य में बकरी पालन व्यवसायिक रुप ले चुका है । भारत वर्ष में जब गाय, भैंस आदि पशु चरागाह की कमी और अपनी अधिक आहार व आवास की आवश्यकता के कारण उपयोगिता खो रहे हैं बकरी दूध एवं मांस के माध्यम से देश के लाखों परिवारों को खाद्य सुरक्षा प्रदान कर रही है। देखने में आया है कि आज भी अधिकांश बकरी पालक परंपरागत तरीकों से बकरी पालन कर रहे हैं, जिससे उत्पादन एवं प्राप्त लाभ बकरियों की उत्पादन क्षमता का लगभग 40-50% है। यदि वैज्ञानिक विधि से व्यवसायिक बकरी पालन किया जाए तो उत्पादन एवं लाभ को कई गुणा बढ़ाया जा सकता है। व्यवसायिक बकरी पालन से उचित लाभ तभी प्राप्त किया जा सकता है जब कम से कम 100 बकरियाँ पाली जाएँ। प्रस्तुत लेख वैज्ञानिक पद्यति से व्यवसायिक बकरी पालन को बताता है जिससे लाभ 5-6 गुना तक प्राप्त किया जा सकता है। व्यवसायिक बकरी पालन में ध्यान देने योग्य बातें:

नस्ल का चुनाव:

1. नस्ल का चुनाव पोषण पद्धति, वातावरण, पारिस्थितिकी एवं बाजार के अनुरूप हो।
2. शुद्ध नस्ल की बकरियाँ ही रखें।

बीजू बकरे का चुनाव:

1. नर शुद्ध नस्ल का, शारीरिक रूप से पूर्ण स्वस्थ एवं चुस्त हो।
2. आहार को शरीर भार में परिवर्तित करने की अधिकतम क्षमता हो।
3. मध्यम एवं बड़े आकार की नस्लों में नर का भार नौ माह की उम्र तक 20-25 किलो तक होना चाहिए।
4. मां नस्ल के अनुरूप अधिक दूध देने वाली हो।
5. नर में अपने गुणों को अपनी संतति में छोड़ने की क्षमता हो।
6. मिलन कराने पर (>90%) बकरियों को गर्भित करता हो।
7. नर रोग ग्रसित एव संक्रमित रोग का वाहक न हो।

बकरी का चुनाव:

1. बकरी शुद्ध नस्ल की एवं शारीरिक रूप से स्वस्थ होनी चाहिए।
2. नस्ल के अनुरूप कद काठी व ऊंचाई -लम्बाई अच्छी होनी चाहिए।
3. दूध की मात्रा एवं दुग्ध काल अच्छा होना चाहिए।
4. प्रजनन क्षमता (दो ब्यातों के बीच अन्तराल एवं जुड़वा बच्चे पैदा करने की दर) अच्छी हो।

प्रजनन प्रबन्ध :

1. पूर्ण परिपक्व होने के बाद ही (डेढ़ से दो वर्ष) बकरे का प्रजनन के लिये उपयोग न करें।
2. एक बकरा 25 से 30 बकरियों को ग्याभिन कराने के लिए पर्याप्त है। 30 से अधिक बकरियों पर बकरों की संख्या बढ़ा देनी चाहिए।
3. प्रजनक बकरे को एक से डेढ़ वर्ष बाद बदल दें। जिससे अन्त: प्रजनन के दुष्परिणामों से बचा जा सके।
4. मध्यम आकार की नस्लों में प्रथमवार बकरियों को गर्भित कराते समय उनका शरीर भार 16 किलो एवं उम्र 10 माह या अधिक हो।
5. बड़े आकार की नस्लों में प्रथम वार बकरियों को गर्भित कराते समय उनका शरीर भार 20 किग्रा. एवं उम्र 12 माह होनी चाहिए।
6. वातावरण को ध्यान में रखते हुये उत्तर-मध्य भारत में बकरियों को अक्टूबर-नवम्बर एवं मई-जून माह में ग्याभिन करायें।
7. कम प्रजनन एवं उत्पादन क्षमता वाली (10 - 20 %) एवं रोग ग्रसित मादाओं को प्रतिवर्ष निष्कलन करते रहना चाहिए।
8. मादाओं को गर्मी में आने के 10-16 घन्टे बाद नर से मिलन करायें।

पोषण प्रबन्ध :

1. नवजात बच्चों को पैदा होने के आधे घन्टे के अन्दर खीस पिलायें। इससे उन्हें जीवन भर रोग प्रतिरोधक क्षमता प्राप्त होती है।
2. बच्चों को 15 दिन का होने पर हरा चारा एवं रातब मिश्रण खिलाना आरंभ करें तथा 3 माह का होने पर माँ का दूध पिलाना बन्द कर दें ।
3. मांस उत्पादन के लिये नर बच्चों को 3 से 9 माह की उम्र तक शरीर भार का 2.5 से 3% तक समुचित मात्रा में ऊर्जा (मक्का, जौ, गेहूँ) एवं प्रोटीन (मूंगफली, अलसी, तिल, बिनौला की खल) अवयव युक्त रातब मिश्रण देवें। इस रातब मिश्रण में ऊर्जा की मात्रा लगभग 60% एवं प्रोटीन युक्त अवयब लगभग 37%, खनिज मिश्रण 2% एवं नमक 1% होना चाहिए।
4. वयस्क बकरियों (एक साल से अधिक) एवं प्रजनन के लिये पाले जाने वाले नरों में ऊर्जायुक्त अवयबों की मात्रा लगभग 70% होनी चाहिए। पोषण में खनिजों एवं लवणों को नियमित रूप से शामिल रखें।
5. जिन बकरियों का दूध उत्पादन लगभग 500 मि.ली./दिन हो उन्हें 250 ग्राम, एक लीटर दूध पर 500 ग्राम रातब मिश्रण दें। इसके उपरान्त प्रति एक लीटर अतिरिक्त दूध पर 500 ग्राम अतिरिक्त रातब मिश्रण देवें।
6. दूध देने वाली, गर्भवती बकरियों (आखिर के 2 से 3 माह) एवं बच्चों (3 से 9 माह) को 200 से 350 ग्राम प्रतिदिन रातब मिश्रण दें।
7. हरे चारे के साथ सूखा चारा अवश्य दें। अचानक आहार व्यवस्था में बदलाव न करें एवं अधिक मात्रा में हरा एवं गीला चारा न दें।

आवास प्रबन्ध:

1. पशु गृह में पर्याप्त मात्रा में धूप, हवा एवं खुली जगह हो।
2. सर्दियों में ठंड से एवं बरसात में बौछार से बचाने की व्यवस्था करें।
3. पशु गृह को साफ एवं स्वच्छ रखें।
4. अल्प आयु मेमनों को सीधे मिट्टी के सम्पर्क में आने से बचने के लिए फर्श पर सूखी घास या पुआल बिछा दें तथा उसे तीसरे दिन बदलते रहें।
5. वर्षा ऋतु से पूर्व एवं बाद में फर्श के ऊपरी सतह की 6 इंच मिट्टी बदल दें।
6. अल्प आयु मेमनों, गर्भित बकरियों एवं प्रजनक बकरे की अलग आवास व्यवस्था करें।
7. एक वयस्क बकरी को 3-4 वर्ग मीटर खुला एवं 1-2 वर्ग मीटर